पश्चिम बंगाल राज्य दिवस पर माननीय राज्यपाल का संबोधन

दिनांक 20 जून 2023, मंगलवार	समय : 5.30 PM	स्थान : दरबार हॉल, राजभवन

रवींद्रनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अमलेंदु चक्रवर्ती

कॉटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र डेका

विश्वविद्यालय के बंगाली विभाग के प्रमुख तथा बंगाली साहित्य सभा के महासचिव डॉ. प्रशांत चक्रवर्ती

यहां उपस्थित आदरणीय गणमान्य व्यक्ति,

राजभवन के अधिकारीगण

राजभवने आपनादेर सबाइके स्वागतम् जनाइ!

आज का दिन पश्चिम बंगाल राज्य के लिए खास दिन है। एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत आज हम यहां पश्चिम बंगाल राज्य का स्थापना दिवस मनाने के लिए इकट्ठा हुए हैं।

देश की आजादी के समय जब भारत के दो टुकड़े हो रहे थे, तब पूरे बंगाल को पूर्वी पाकिस्तान यानी आज के बांग्लादेश का हिस्सा बनाया जा रहा था। हालांकि तब श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे युगदृष्टा नेता ने इसके खिलाफ हिन्दु और बंगाली समुदाय को जागृत किया।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जिन्ना तथा उनके तमाम समर्थकों के वृहद साजिशों के बावजूद पश्चिम बंगाल का भारत के साथ अक्षुण्य अस्तित्व बरकरार रहा।

तभी से 20 जून का दिन हर साल पश्चिम बंगाल दिवस के तौर पर मनाया जाता है।

अनोखी बात यह है कि देश के पूर्वी भाग में होने के बावजूद यह पश्चिम बंगाल कहलाता है। इसे समझने के लिए हमें देश के विभाजन के उस काले अध्याय को जानना होगा। दरअसल साल 1947 में भारत के आजाद होने के साथ ही बंगाल पूर्वी और पश्चिमी, दो हिस्सों में विभाजित हुआ। पहला था मुस्लिम प्रधान पूर्व बंगाल, और दूसरा हिस्सा था पश्चिम बंगाल।

पूर्व बंगाल का पाकिस्तान में विलय हो गया और पूर्वी पाकिस्तान कहलाया। लेकिन 1971 के युद्ध के बाद पूर्वी पाकिस्तान स्वतंत्र होकर बांग्लादेश बन गया। इसी का पश्चिमी हिस्सा आज पश्चिम बंगाल कहलाता है।

मित्रों,

बंगालियों ने हमेशा से ही साहित्य, कला, संगीत और रंगमंच को संरक्षण दिया है। बांग्ला साहित्य का आविर्भाव 12वीं सदी से पहले हुआ। हिन्दू धर्म के एक संघन भावनात्मक स्वरूप, चैतन्य आन्दोलन, को मध्यकालीन संत चैतन्य ने प्रेरित किया, जिसने 19वीं सदी के आरम्भ तक बांग्ला कविता के परवर्ती विकास को आकार दिया। इसके बाद पश्चिम के साथ हुए सम्पर्क ने एक द्रुत बहुमुखी सृजनात्मक युग की शुरुआत की। आधुनक युग में अन्य साहित्यकारों के साथ नोबेल पुरस्कार विजेता कवि रवीन्द्रनाथ

ठाकुर हुए, जिनका योगदान आज भी भारतीय साहित्यिक परिदृश्य पर छाया हुआ है।

बंगाल में कई महान क्रांतिकारी संत हुए हैं। चैतन्य महाप्रभु, स्वामी प्रणवानंद, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद, कृतिवास, बाउल संत, प्रभु जगत्बंधु का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इसके अलावा युक्तेश्वर गिरि, योगी श्यामाचरण लाहिड़ी, स्वामी योगानंद और प्रभात रंजन सरकार ऊर्फ आंनदमूर्ति भी बंगाल में सक्रिय रहे हैं।

52 शक्तिपीठों में से बांग्लादेश में 4 और बंगाल में लगभग 12 से 13 शक्तिपीठ विद्यमान हैं। अधिकतर शक्तिपीठ बंगाल में ही विराजमान हैं, क्योंकि प्राचीन काल से ही बंगाल शाक्त और तंत्र मार्ग का गढ़ रहा है। नवरात्रि में दुर्गा पूजा बंगाल का प्रमुख त्योहार है।

बंगाल के प्रमुख मंदिरों में कालीघाट का कालिका माता का मंदिर कोलकाता, दक्षिणेश्वर काली मंदिर कोलकाता, हंसेश्वरी मंदिर बांसबेरिया, त्रिपुर सुंदरी मंदिर गारिया, कनक दुर्गा मंदिर मिदनापुर, तारापीठ मंदिर बीरभूमि, कृपामयी काली मंदिर 24 परगना बारानगर, खप्पा ताल मंदिर मालो पाडा, रामपारा काली मंदिर कालीबाड़ी, किरीतेश्वरी मंदिर मुर्शिदाबाद। यह तो सभी कालिका माता के मंदिर थे। इसके अलावा हुगली के तट पर तारकेश्वर मंदिर, श्रीरामकृष्ण मठ, हंगेश्वरी मंदिर, हुगली इमामबाड़ा और बैंडेल चर्च को देखा जा सकता है।

बंगाल में हजारों कवि, साहित्यकार, सिनेमाकार, प्रसिद्ध नेता आदि हुए हैं जिन्होंने भारत का नाम विश्व में प्रसिद्ध किया है। आधुनिक काल में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, मलय रायचौधुरी, देबी राय, सुबिमल बसाक, समीर रायचौधुरी, रवींद्रनाथ ठाकुर प्रमुख कविगण रहे हैं।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, जगदीश चन्द्र वसु (बोस), सत्यजित राय, तपन सिन्हा, मृणाल सेन और अपर्णा सेन, बिधान चन्द्र राय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय, सत्येन्द्र नाथ बोस, महाश्वेता देवी, राजा राममोहन राय, सौरभ गांगुली, शर्मिला टैगोर, अमर्त्य सेन, खुदीराम बोस, भूदेव मुखोपाध्याय आदि अनेक महान लोग हुए हैं।

150 वर्षों से असम और बंगाल के बीच घनिष्ठ रिश्ता रहा है। बताया जाता है कि आनंदराम बरुआ के पूर्वज दुर्गाचरण बसु थे और कनकलाल बरुआ के पूर्वज पीताम्बर घोष थे। अहोम राजाओं के शासनकाल के दौरान, बंगाल से संगीतकारों को आमंत्रित किया गया था। संभवतः इसी कारण ये बंगाल के लोग असम आते थे।

इसी तरह महामहिम रुद्र सिंह ने नदिया शांतिपुर के कृष्णराम न्यायबागिश को बंगाल में आमंत्रित किया और उन्हें शक्ति मंत्र की दीक्षा दी। कृष्ण ने कामाख्या पर्वत पर रहने का फैसला किया। अहोम राजाओं के इस बंगाली गुरु को असम के इतिहास में "परबतिया गोसाई" के नाम से जाना जाता है। वह असम के शाही घरों में दुर्गा पूजा, चंडीपाठ, कामाख्या मंदिर और अन्य मंदिरों की पूजा शुरू करने वाले पहले बंगाली तंत्र गुरु थे। उन्होंने कामाख्या मंदिर में "दुर्गार्चिमनमंजरी" नामक एक अनुष्ठान किया।

यंदाबू की संधि भी असम और बंगाल के सोहार्दपूर्ण रिश्ते का ऐतिहासिक प्रमाण है। 24 फरवरी 1826 को हस्ताक्षरित यंदाबू की संधि पर असम के एक बंगाली वकील ने हस्ताक्षर किए थे। इनका नाम जयशंकर गुहा है। वह अहोम राजाओं चंद्रकांता, प्राणकांत और केशवकांता के कानूनी सलाहकार थे।

1857 में स्वतंत्रता संग्राम में मनीराम दीवान के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करने वाले सेनानियों में से एक बंगाली स्वतंत्रता सेनानी था, जिनका नाम मधु मल्लिक था।

असम साहित्य सभा के मुख्य प्रस्तावकों और अग्रदूतों में से एक बंगाली विद्वान थे। उनका नाम महामहोपाध्याय पद्मनाथ भट्टाचार्य विद्याविनोद है। वह कॉटन कॉलेज में एक प्रमुख प्रोफेसर थे।

बंगाल के एक प्रमुख साहित्यकार रमेश चंद्र दत्ता ने ब्रिटिश सरकार को लिखित रूप में सूचित किया था कि असमिया भाषा एक स्वतंत्र भाषा थी। उनके असमिया दामाद बालिनारायण बोरा, जो कि असम के पहले इंजीनियर थे, ने असम के स्कूलों में बंगाली के उपयोग की वकालत की थी।

असमिया-बंगाली वैवाहिक संबंध कोई नई बात नहीं है। असम में अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत करने वाले जनमेजय दास ने एक असमिया लड़की से शादी की थी। जनमेजय दास असम के पहले विद्यालय कॉटन कॉलेजिएट स्कूल के प्रधानाध्यापक थे।

तीन प्रमुख बंगाली साहित्यकारों विश्व कवि रवींद्रनाथ टैगोर, सर आशुतोष और आचार्य प्रफुल्ल चंद्र ने असमिया गद्य की प्राचीनता और गुणवत्ता की बहुत प्रशंसा की है।

अंत में एक भारत श्रेष्ठ भारत बनाने के इस अभियान में आप सभी के सहयोग की कामना करता हूँ और आप सभी को पश्चिम बंग के राज्य दिवस की शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद!

जय हिन्द!